छोटे-छोटे बीजों से बड़े-बड़े वृक्षों की उत्पत्ति और विकास होता है। यदि बीज उन्नत कोटि का है तो फिर इसका प्रभाव वृक्ष के विकास पर भी पड़ता है। परन्तु बीज के खराब होने पर या तो वृक्ष उत्पन्न ही नहीं होता या जल्दी ही सड़-गलकर विनष्ट हो जाता है। हमारे विचार भी बीज के समरूप हैं जो मानव के भावी जीवनरूपी वृक्ष की दशा और दिशा तय करते हैं। विवेकानन्द का भी कहना है कि- *''आप जैसा विचार करते हैं वैसा ही बन जाते हैं।''*

विचार का आशय मन-मस्तिष्क में उठने वाले सोच, भावना या कुछ करने या न करने की मानसिक समझ से है, जो हमारे कार्य-व्यवहार एवं प्रतिक्रिया के ढंग को निर्धारित करते हैं। किसी व्यक्ति का अच्छा या बुरा होना मूलतः उसके विचारों की शुद्धता एवं मलिनता पर ही निर्भर करता है।

महात्मा गाँधी का मानना है कि *''मनुष्य अपने विचारों से निर्मित प्राणी है वह जैसा सोचता है, वैसा ही हो जाता है।''* शेक्सपीयर का भी कहना था कि अच्छा या बुरा कुछ नहीं होता, केवल विचार ही किसी वस्तु को अच्छा या बुरा बनाते हैं।

मानवकाल में अब तक जितने भी परिवर्तन हुए हैं वे सर्वप्रथम विचार के स्तर पर उत्पन्न हुए। पाषाण हथियारों से लेकर आधुनिक परमाणु बमों तक, बैलगाड़ी से लेकर चन्द्रयान तक, बिजली से लेकर कम्प्यूटर तक और वर्तमान में अत्यंत चर्चित कृत्रिम बुद्धि विचारों के ही उत्पाद हैं। सेब के पृथ्वी पर गिरने से गुरुत्वाकर्षण की खोज, भाप की केतली से रेल इंजन का निर्माण, सभी विचारों की देन है।

विचार हमारे जीवन में परिवर्तन के उत्प्रेरक हैं। जे.एस. मिल अपनी पुस्तक "On Liberty" में विचार की स्वतंत्रता पर बल देते हुए कहते हैं कि ''हर विचार में कुछ न कुछ सच्चाई निहित होती है इसलिये उसका सम्मान किया जाना चाहिए।'' भारतीय संविधान में भी मौलिक अधिकारों के अंतर्गत अनुच्छेद-19 में नागरिकों को वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार दिया गया है, जिसमें अपने विचारों के प्रसार एवं प्रकाशन की स्वतंत्रता सम्मिलित है। हीगल का भी मानना है कि विकास के बीज संघर्ष में निहित होते हैं, तथा ये विरोधी विचारों के कारण ही सम्भव होता है। व्यक्तिगत मनोदशा, पसंद-नापसंद, विचारधारा आदि का कारण विचार ही है।

स्वतंत्रता, समानता और न्याय का विचार आज भी समाज में परिवर्तन और अधिकारों की रक्षा के भाव को मजबूती प्रदान करता है। फ्रांसीसी, रूसी, अमेरिकी क्रांति के मूल में विचार ही प्रेरणास्रोत रहे। कार्ल मार्क्स ने विचारों के आधार पर ही साम्यवादी क्रान्ति की संकल्पना बुनी गयी। सामाजिक न्याय, समावेशी विकास एवं सतत् विकास के साथ-साथ आधुनिक समाज की संकल्पना भी विचारों की देन है।

व्यक्ति के विचारों का प्रभाव जीवन के विभिन्न पक्षों पर पड़ता है। विचार जीवन की रूपरेखा तय करते हैं। विचार ही हमारे कार्यों की प्रेरणा शक्ति हैं। लैंगिक परिप्रेक्ष्य में पितृसत्तात्मकता का विचार, पुरुष की श्रेष्ठता का विचार आदि लैंगिक अन्याय का कारण बना। जे.एस. मिल ने अपनी पुस्तक 'Subjection of Women' तथा 'सीमोन द बोऑर ने "The second sex" में इन्हीं विचारों का खण्डन किया है। वर्तमान समय में महिला अधिकार, सशक्तीकरण, लैंगिक समानता आदि आधुनिक विचारों की देन है।

गार्गी-याज्ञवल्य संवाद, यक्ष-युधिष्ठिर संवाद, शंकर-मण्डन मिश्र संवाद, नागार्जुन-मिलिंद संवाद आदि ने विचारों की बौद्धिक पराकाष्ठा के दर्शन कराये। बुद्ध, महावीर, गुरूनानक देव, पैगम्बर मोहम्मद, ईसा मसीह आदि के विचार आज भी करोड़ों लोगों के जीवन का मार्गदर्शन करते हैं और मूल्यपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

गाँधी के विचारों और कार्य-पद्धति से प्रभावित होकर लाखों नवयुवकों ने अपने पद और पेशे को छोड़कर राष्ट्रीय आन्दोलन में भागीदारी की। साध्य के साथ-साथ साधन की पवित्रता में दृढ-विचार के कारण ही गाँधी ने चौरा-चौरी में हिंसक घटना होने पर असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया।

सकारात्मक विचार जहाँ जीवन में उल्लास, नवाचार एवं सृजनात्मकता को बढ़ाते हैं वहीं नकारात्मक विचार शोषण, हिंसा एवं भेदभाव को बढ़ाकर सामाजिक ताने-बाने को नष्ट करने का प्रयास करते हैं। जैसे- हिटलर की जर्मन सर्वश्रेष्ठता तथा यहूदी निष्कृष्टता का विचार लाखों यहूदियों की मृत्यु का कारण बने।

वस्तुतः वैचारिक सुदृढ़ता एवं रचनात्मकता ही सफलता का पाथेय बनती है। बिना समुचित विचार किए जो व्यक्ति कर्म करता है उसे जीवन में प्रायः पछताना पड़ता है और वह समाज में हंसी का पात्र भी बनता है। कहा भी गया है-

''बिना विचारे जो करै, सौ पाछे पछताय।
काम बिगारे आपना, जग में होत हँसाय॥''

गांधी जी विचार तथा व्यवहार के समन्वय को महत्वपूर्ण मानते हैं। विचार को धरातल पर उतारने में साहस, निडरता, धैर्य तथा संयम की भूमिका महत्वपूर्ण है।

पवित्र, शक्तिशली, दृढ़ विचार ही मानव जीवन का सही मार्गदर्शन करते हैं। ऐसे सद्विचारों की उत्पत्ति में बाल्यावस्था में माता-पिता से प्राप्त संस्कार, शिक्षकों का मार्गदर्शन, सज्जनों की संगति, चिंतन, मनन, स्वाध्याय और व्यक्तिगत अनुभव की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विचारों के बिना जीवन जड़-विहीन वृक्ष के समान है। परन्तु छिछले, सतही, कमजोर विचार जीवन का पाथेय नहीं हो सकते।

अन्ततः जिस प्रकार बुद्ध के एक विचार ने युग परिवर्तन घटना को साकारित किया। उसी प्रकार वर्तमान समय में भी सकारात्मक विचारों को बढ़ावा देना आवश्यक है। जिससे व्यक्तिगत मार्गदर्शन, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय लैंगिक समता तथा समावेशिता को बल मिले साथ ही सामाजिक समरसता, सामाजिक तथा पर्यावरणीय न्याय तथा सामंजस्य को बढ़ावा मिल सके। इसके अलावा विचारों का प्रयोग स्वयं, परिवार, समाज तथा विश्व के कल्याण तथा उन्हें लाभान्वित करने हेतु किया जाए। तभी जाकर एक स्वस्थ समाज और स्वस्थ जीवन की आधारशिला निर्मित होगी। जैसा कि विवेकानन्द जी का कथन है-

''एक विचार लो, उसे अपना जीवन बना लो,
उसी के सपने देखो, अपने मस्तिष्क तथा शरीर
को पूरी तरह उसमें लगा दो।
यही जीवन की सफलता तथा स्थिरता हेतु आवश्यक है।''

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR